Namaze Fajr Ke Fazaail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 303
Weekly Booklet : 303

अमीरे अहले सुन्नत की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की

एक क़िस्त बनाम

नमाज़े फ़ज्र के फ़ज़ाइल

पांच नमाज़ों में फ़ज़ीलत की तरतीब 01
नमाज़े फ़ज्र की पाबन्दी कौन कर सकता है ? 04
नींद में कमी लाने के त़रीक़े 10
जुमुआ़ की फ़ज्र बा जमाअ़त की ख़ुसूसी फ़ज़ीलत 14

सफ़हात 20

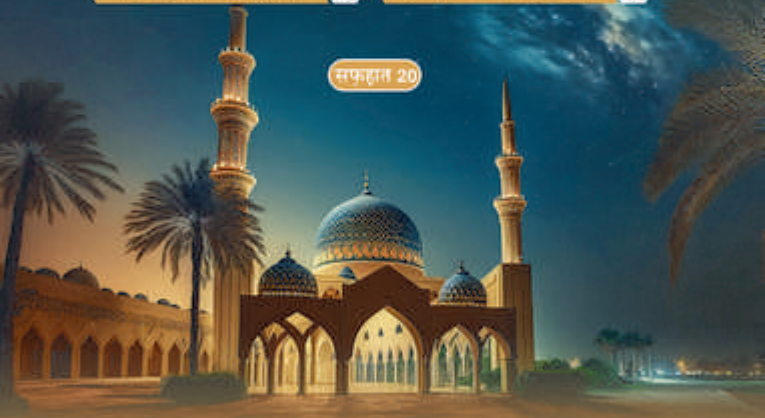

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **नमाज़े फ़ज्र के फ़ज़ाइल**

सिने त़बाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम **1444** हि., मई **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

नमाज़े फ़ज्र के फ़ज़ाइल

येह रिसाला **(नमाज़े फ़ज्र के फ़ज़ाइल)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

येह मज़्मून ''फ़ैज़ाने नमाज़'' सफ़ह़ा 85 ता 99 से लिया गया है।

नमाज़े फ़ज्र के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला **''नमाज़े फ़ज्र के फ़ज़ाइल''** पढ़ या सुन ले उसे पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मैं ने गुज़श्ता रात अ़जीब वाक़िआ़ देखा, मैं ने अपने एक उम्मती को देखा जो पुल सिरात़ पर कभी घिसट कर और कभी घुटनों के बल चल रहा था, इतने में वोह दुरूद आया जो उस ने मुझ पर भेजा था, उस ने उसे पुल सिरात़ पर खड़ा कर दिया यहां तक कि उस ने पुल सिरात़ पार कर लिया। (معجم کبیر، 25/282، حدیث:39)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पांच नमाज़ों में फ़ज़ीलत की तरतीब

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं **:** पांचों नमाज़ों में सब से अफ़्ज़ल **नमाज़े अ़स्र** है फिर नमाज़े फ़ज्र फिर इ़शा फिर मग़रिब फिर ज़ोहर। और पांचों नमाज़ की जमाअ़तों में अफ़्ज़ल जमाअ़त **नमाज़े**

जुमुआ की जमाअ़त है फिर फ़ज्र की फिर इ़शा की। जुमुआ़ की जमाअ़त इस लिये अफ़्ज़ल है कि इस में कुछ ऐसी ख़ुसूसिय्यात हैं जो इसे दीगर नमाज़ों से मुमताज़ करती हैं जब कि फ़ज्र व इ़शा की जमाअ़त इस लिये फ़ज़ीलत वाली हैं कि इन में मशक़्क़त (या'नी मेहनत) ज़ियादा है। (فیض القدیر، 2/53)

नमाज़ की पाबन्दी जन्नत में ले जाएगी

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है कि मैं ने तुम्हारी उम्मत पर (दिन रात में) पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं और मैं ने येह अ़ह्द किया है कि जो इन नमाज़ों की उन के वक़्त के साथ पाबन्दी करेगा मैं उस को जन्नत में दाख़िल फ़रमाऊंगा और जो पाबन्दी नहीं करेगा तो उस के लिये मेरे पास कोई अ़ह्द नहीं। (ابوداود، 1/188، حدیث:430)

फ़ज्र की नमाज़ के फ़ज़ाइल

इमाम फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने (ताबेई़ बुज़ुर्ग) ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से नक़्ल किया कि उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने "**तौरैत**" के किसी मक़ाम में पढ़ा (**अल्लाह** पाक फ़रमाता है :) ऐ मूसा ! **फ़ज्र** की दो रक्अ़तें **अह़मद** और उस की उम्मत अदा करेगी, जो इन्हें पढ़ेगा उस दिन रात के सारे गुनाह उस के बख़्श दूंगा और वोह मेरे ज़िम्मे में होगा। ऐ मूसा ! **ज़ोह़र** की चार रक्अ़तें **अह़मद** और उस की उम्मत पढ़ेगी उन्हें पहली रक्अ़त के इ़वज़ (या'नी बदले) बख़्श दूंगा और दूसरी के बदले उन (की नेकियों) का पल्ला भारी कर दूंगा और तीसरी के लिये फ़िरिश्ते मुअक्कल (या'नी मुक़र्रर) करूंगा कि तस्बीह़ (या'नी **अल्लाह** पाक की पाकी बयान) करेंगे और उन के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते रहेंगे और चौथी के बदले उन के लिये आस्मान के दरवाज़े कुशादा कर (या'नी खोल) दूंगा,

बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें उन पर मुश्ताक़ाना (या'नी शौक़ भरी) नज़र डालेंगी। ऐ मूसा! **अ़स्र** की चार रक्अ़तें **अह़मद** और उन की उम्मत अदा करेगी तो हफ़्त (या'नी सातों) आस्मान व ज़मीन में कोई फ़िरिश्ता बाक़ी न बचेगा, सब ही उन की मग़्फ़िरत चाहेंगे और मलाएका (या'नी फ़िरिश्ते) जिस की मग़्फ़िरत चाहें मैं उसे हरगिज़ अ़ज़ाब न दूंगा। ऐ मूसा! **मग़रिब** की तीन रक्अ़त हैं, उन्हें **अह़मद** और उस की उम्मत पढ़ेगी (तो) आस्मान के सारे दरवाज़े उन के लिये खोल दूंगा, जिस ह़ाजत का सुवाल करेंगे उसे पूरा ही कर दूंगा। ऐ मूसा! शफ़क़ डूब जाने के वक़्त[1] या'नी **इ़शा** की चार रक्अ़तें हैं, पढ़ेंगे उन्हें **अह़मद** और उन की उम्मत, वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस की हर चीज़) से उन के लिये बेहतर हैं, वोह उन्हें गुनाहों से ऐसा निकाल देंगी जैसे अपनी माओं के पेट से पैदा हुए। ऐ मूसा! **वुज़ू** करेंगे **अह़मद** और उस की उम्मत जैसा कि मेरा हुक्म है, मैं उन्हें अ़त़ा फ़रमाऊंगा हर क़त़रे के इ़वज़ (या'नी बदले) कि पानी से टपके, एक जन्नत जिस का अ़र्ज़ (या'नी फैलाव) आस्मान व ज़मीन की चौड़ाई के बराबर होगा। ऐ मूसा! एक महीने के हर साल **रोज़े** रखेंगे **अह़मद** और उस की उम्मत और वोह **माहे रमज़ान** है, मैं अ़त़ा फ़रमाऊंगा उस के हर दिन के रोज़े के इ़वज़ (या'नी बदले) **जन्नत** में एक शह्र और अ़त़ा करूंगा उस में नफ़्ल के बदले फ़र्ज़ का सवाब और उस में लैलतुल क़द्र करूंगा, जो इस महीने में शर्मसारी व सिद्क़ (या'नी शरमिन्दगी व सच्चाई) से एक बार इस्तिग़्फ़ार (या'नी तौबा) करेगा अगर उसी शब या उसी महीने भर में मर गया उसे **तीस शहीदों** का सवाब अ़त़ा फ़रमाऊंगा। (ह़ाशियए फ़तावा रज़विय्या, 5/ 52 ता 54)

1... इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के नज़्दीक शफ़क़ उस सफ़ेदी का नाम है जो मग़रिब में सुर्ख़ी डूबने के बा'द सुब्हे सादिक़ की त़रह़ फैली हुई रहती है।

पढ़ते रहो नमाज़ कि जन्नत में जाओगे होगा वोह तुम पे फ़ज़्ल कि देखे ही जाओगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ज्र की नमाज़ के फ़ज़ाइल

फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने वाला, अल्लाह के ज़िम्मे

सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : जो सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ता है वोह शाम तक **अल्लाह** पाक के ज़िम्मे में है। (معجم کبیر، 12/240، حدیث:13210) एक दूसरी रिवायत में है : "तुम **अल्लाह** पाक का ज़िम्मा न तोड़ो जो **अल्लाह** पाक का ज़िम्मा तोड़ेगा **अल्लाह** पाक उसे औंधा (या'नी उलटा) कर के दोज़ख़ में डाल देगा।"

(مسند امام احمد بن حنبل، 2/445، حدیث:5905)

नमाज़े फ़ज्र की पाबन्दी कौन कर सकता है ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : "जो **फ़ज्र की नमाज़** इख़्लास के साथ पढ़े वोह **अल्लाह** पाक की अमान (या'नी ह़िफ़ाज़त) में है और ख़ास सुब्ह़ (या'नी फ़ज्र) की नमाज़ का ज़िक्र करने में ह़िक्मत येह है कि इस **नमाज़** में मशक़्क़त (या'नी मेह़नत) है और इस पर पाबन्दी सिर्फ़ वोही शख़्स कर सकता है जिस का ईमान ख़ालिस हो, इसी लिये वोह अमान (या'नी पनाह) का मुस्तह़िक़ होता है।" दूसरी जगह लिखते हैं : **अल्लाह** पाक का ज़िम्मा तोड़ने की सख़्त वईद (या'नी सज़ा की धमकी) और **फ़ज्र की नमाज़** पढ़ने वाले शख़्स को ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) पहुंचाने से डरने का बयान है। (فیض القدیر، 6/231، 214)

शैत़ान का झन्डा

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, मेरे आक़ा, ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो सुब्ह़ की **नमाज़** को गया ईमान के झन्डे के साथ गया और जो सुब्ह़ बाज़ार को गया इब्लीस (या'नी शैत़ान) के झन्डे के साथ गया।" (ابن ماجہ، 3/53، حدیث:2234)

रह़मानी और शैत़ानी गुरौह

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी इन्सानों के दो टोले (2 Groups) ही हैं : ﴿1﴾ ह़िज़्बुल्लाह (या'नी **अल्लाह** का गुरौह) और ﴿2﴾ ह़िज़्बुश्शैत़ान (या'नी शैत़ान का गुरौह)। इन की शनाख़्त (या'नी पहचान) येह है कि रह़मानी टोले वाले दिन की इब्तिदा **नमाज़** और **अल्लाह** पाक के ज़िक्र से करते हैं और शैत़ानी टोले वाले बाज़ार व दुन्यावी कारोबार से। ख़याल रहे कि दुन्यवी कारोबार मन्अ़ नहीं मगर सवेरे उठते ही न ख़ुदा का नाम न उस की इ़बादत बल्कि उन (या'नी दुन्यवी कामों) में लग जाना येह शैत़ानी काम है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1/399)

शैत़ान का तीन गिरहें लगाना

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई सोता है तो शैत़ान उस की गुद्दी (या'नी गरदन के पिछले ह़िस्से) में तीन गिरहें (या'नी तीन गांठें) लगा देता है, हर गिरह (या'नी गांठ) पर येह बात दिल में बिठाता है कि अभी रात बहुत है सो जा, पस अगर वोह जाग कर **अल्लाह का ज़िक्र** करे तो एक गिरह (या'नी गांठ) खुल जाती है, अगर **वुज़ू** करे तो दूसरी

गिरह खुल जाती है और **नमाज़** पढ़े तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है, फिर वोह खुश खुश और तरो ताज़ा हो कर सुब्ह़ करता है, वरना ग़मगीन दिल और सुस्ती के साथ सुब्ह़ करता है। (بخاری، 1/387، حدیث:1142)

सुब्ह़ के वक़्त मज़े की नींद का सबब

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : शैत़ान इन्सान के बालों में या धागे में सुब्ह़ के वक़्त ग़फ़्लत की तीन गिरहें लगा देता है, इसी लिये सुब्ह़ के वक़्त बड़े मज़े की नींद आती है, **हुज़ूर** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन तीन गिरहों (या'नी गांठों) के खोलने के लिये तीन अ़मल इर्शाद फ़रमाए। (जो बयान कर्दा ह़दीसे पाक में मौजूद हैं) (मिरआतुल मनाजीह़, 2/253)

वक़्त शुरूअ़ होते ही सुन्नते फ़ज्र पढ़ लेना बेहतर है

"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" सफ़ह़ा 352 पर है : (फ़ज्र के) अव्वल वक़्त सुन्नतें पढ़ना औला (या'नी बेहतर) है।

परेशान ह़ाल हो कर सुब्ह़ करने वाला कौन ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के ह़िस्से : "फिर वोह खुश खुश और तरो ताज़ा हो कर सुब्ह़ करता है" के तह़्त फ़रमाते हैं : क्यूं कि वोह शैत़ान की क़ैद और ग़फ़्लत की चादर से छुटकारा पा कर **अल्लाह** पाक की ख़ुशी पाने में काम्याब हो चुका होता है। इस के उलट जो शख़्स रात में उठ कर न **ज़िक्रुल्लाह** करता है और न **वुज़ू** कर के **नमाज़** पढ़ता है बल्कि शैत़ान की फ़रमां बरदारी करते हुए सोया रहता है ह़त्ता कि उस की फ़ज्र की नमाज़ तक निकल जाती है, तो वोह ग़मगीन दिल और बहुत सारी फ़िक्रों के साथ और अपने काम पूरे करने के तअ़ल्लुक़ से ह़ैरान

व परेशान हो कर सुब्ह़ करता है और जो काम भी करने का इरादा करता है उस में ना काम्याब रहता है क्यूं कि वोह **अल्लाह** पाक की नज़्दीकी से दूर हो कर शैत़ान के धोके के जाल में फंस चुका होता है। (مرقاۃ المفاتیح، 3/296، 295)

या इलाही ! फ़ज्र में उठने का हम को शौक़ दे

सब नमाज़ें हम जमाअ़त से पढ़ें वोह ज़ौक़ दे

शैत़ान ने कान में पेशाब कर दिया है

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि बारगाहे रिसालत में एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ ज़िक्र किया गया कि वोह सुब्ह़ तक सोता रहा और **नमाज़** के लिये न उठा तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस शख़्स के कान में शैत़ान ने पेशाब कर दिया है।" (بخاری، 1/388، حدیث:1144)

फ़ज्र के लिये न जागना बड़ी नुहूसत है

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के ह़िस्से (नमाज़ के लिये न उठा) के तह़्त फ़रमाते हैं : (या'नी) नमाज़े तहज्जुद के लिये या **नमाज़े फ़ज्र** के लिये (न उठा), पहले (या'नी तहज्जुद में न उठने वाले) मा'ना ज़ियादा मुनासिब हैं क्यूं कि सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) फ़ज्र हरगिज़ क़ज़ा न करते थे और मुम्किन है (येह) किसी मुनाफ़िक़ का वाक़िआ़ हो जो फ़ज्र में न आता था। मा'लूम हुवा कि नमाज़े फ़ज्र में न जागना बड़ी नुहूसत है, नीज़ कोताही करने वालों की शिकायत इस्लाह़ की ग़रज़ से करना जाइज़ है, ग़ीबत नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/254)

शैत़ान वाक़ेई पेशाब करता है

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी क़ुरतुबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : येह बात साबित है कि शैत़ान खाता, पीता और निकाह़ करता है तो अगर वोह पेशाब भी कर ले तो इस में क्या रुकावट है ! (عمدۃ القاری، 5/483)

शैत़ान को भगाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़ फ़िरदौस में बसाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़

शैत़ान का सुरमा वग़ैरा

"**कूतुल कुलूब**" में है : शैत़ान के पास **सऊ़त़** (नाक में डालने वाली कोई चीज़), **लऊ़क़** (चाटने वाली कोई चीज़) और **ज़रूर** (आंख में डालने वाली कोई चीज़) है, जब वोह बन्दे की नाक में (सऊ़त़) डालता है तो उस के अख़्लाक़ बुरे हो जाते हैं, जब (लऊ़क़) चटाता है तो उस की ज़बान बुरा बोलने वाली हो जाती है और जब बन्दे की आंख में (ज़रूर) डालता है तो रात भर सोया रहता है यहां तक कि सुब्ह़ हो जाती है।

(قوت القلوب، 1/76, कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/237)

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठो ! ऐ ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा उठो !

(वसाइले बख़्शिश, स. 666)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

तहज्जुद या फ़ज्र के लिये उठने का मदनी नुस्ख़ा

नमाज़े तहज्जुद या **फ़ज्र** में उठने के लिये सोते वक़्त पारह **16**, **सूरतुल कहफ़** की आख़िरी **4** आयतें पढ़ लीजिये :

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا لَا یَبْغُوْنَ
عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّیْ وَ لَوْ
جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ یُوْحٰۤى اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ یَرْجُوْا
لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا یُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है, वोह हमेशा उन में रहेंगे उन से जगह बदलना न चाहेंगे । तुम फ़रमा दो ! अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समुन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी, अगर्चे हम वैसा ही और उस की मदद को ले आएं । तुम फ़रमाओ ! ज़ाहिर सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं मुझे वही आती है, कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है । तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे ।

और निय्यत कीजिये कि "मुझे इतने बजे उठना है ।" اِنْ شَآءَاللّٰه आयाते मुबारका पढ़ने की बरकत से आंख खुल जाएगी । अगर शुरूअ़ में आंख न भी खुले तो मायूस न हों, वज़ीफ़ा जारी रखिये । اِنْ شَآءَاللّٰه आहिस्ता आहिस्ता तरकीब बन जाएगी ।

जागने के लिये अलार्म SET कर लीजिये

मुक़र्ररा वक़्त पर बेदार होने का एक त़रीक़ा येह भी है कि एक बल्कि तीन घड़ियों पर अलार्म (Alarm) लगा कर सोएं ताकि किसी वज्ह से एक बन्द हो जाए तो दो घड़ियां जगाने के लिये मौजूद रहें । मोबाइल फ़ोन में भी अलार्म की सहूलत होती है । अगर रात देर से सोने की वज्ह से **नमाज़े फ़ज्र** के लिये आंख नहीं खुलती और न कोई जगाने वाला मौजूद है तो ज़रूरी है कि जल्दी सोएं कि फ़ुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : "जब येह अन्देशा हो कि सुब्ह़ की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शरइ़य्या उसे रात देर तक जागना मम्नूअ़ है ।" (ردالمحتار، 2/33)

नींद में कमी लाने के त़रीक़े

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नमाज़े ज़ोह्र की जमाअ़त से क़ब्ल सोने वाले को मदनी फूल देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "अच्छा ठीक दोपहर के वक़्त सो, मगर न इतना कि वक़्ते जमाअ़त आ जाए, थोड़ी सी देर क़ैलूला काफ़ी है। अगर लम्बी नींद से ख़ौफ़ करता है तक्या न रख, बिछोना न बिछा, कि बे तक्या व बे बिस्तर सोना भी मस्नून (या'नी सुन्नत) है। सोते वक़्त दिल को ख़याले जमाअ़त से ख़ूब लगा हुवा रख कि फ़िक्र (Tention) की नींद ग़ाफ़िल नहीं होने देती, खाना जिस क़दर हो सके सुब्ह़ सवेरे खा कि सोने के वक़्त तक खाने के सबब उठने वाली गरमी दूर हो जाए और लम्बी नींद का सबब न बने। सब से बेहतर इ़लाज कम खाना है। सोते वक़्त **अल्लाह** पाक से तौफ़ीक़े **जमाअ़त** की दुआ़ और उस पर सच्चा तवक्कुल (या'नी भरोसा) रख। **अल्लाह** करीम जब तेरी अच्छी निय्यत और सच्चा इरादा देखेगा (तो) ज़रूर तेरी मदद फ़रमाएगा।" एक जगह फ़रमाते हैं : पेट भर कर रात की इ़बादत का शौक़ रखना बांझ (या'नी जो औ़रत बच्चा नहीं जनती उस) से बच्चा मांगना है, जो बहुत खाएगा (वोह) बहुत पियेगा, जो बहुत पियेगा (वोह) बहुत सोएगा, जो बहुत सोएगा (वोह) आप ही येह भलाइयां और बरकतें खोएगा।

(फ़तावा रज़विय्या, 7/88, 90 मुलख़सन)

अल्लाह, अल्लाह के नबी से फ़रियाद है नफ़्स की बदी से
शब भर सोने से ग़रज़ थी तारों ने हज़ार दांत पीसे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 145)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

गोया सारी रात इबादत की

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो नमाज़े इ़शा जमाअ़त से पढ़े गोया (या'नी जैसे) उस ने आधी रात क़ियाम किया और जो फ़ज्र जमाअ़त से पढ़े गोया (या'नी जैसे) उस ने पूरी रात क़ियाम किया।" (مسلم، ص258، حدیث:1491)

शर्हे ह़दीस

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस के दो मत़्लब हो सकते हैं : **एक** येह कि **इ़शा** की बा जमाअ़त नमाज़ का सवाब आधी रात की इ़बादत के बराबर है और **फ़ज्र** की बा जमाअ़त नमाज़ का सवाब बाक़ी आधी रात की इ़बादत के बराबर, तो जो येह दोनों नमाज़ें जमाअ़त से पढ़ ले उसे सारी रात इ़बादत का सवाब। **दूसरे** येह कि **इ़शा** की जमाअ़त का सवाब आधी रात के बराबर है और **फ़ज्र** की जमाअ़त का सवाब सारी रात इ़बादत के बराबर, क्यूं कि येह (या'नी फ़ज्र की) जमाअ़त **इ़शा** की जमाअ़त से ज़ियादा भारी (या'नी नफ़्स पर बोझ) है, पहले मा'ना ज़ियादा क़वी (या'नी ज़ियादा मज़बूत़) हैं। जमाअ़त से मुराद **तक्बीरे ऊला** पाना है जैसा कि बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/396) **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 509 पर है : पहली रक्अ़त का रुकूअ़ मिल गया, तो तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत पा गया। (فتاویٰ ہندیہ، 1/69)

तज़्किरए उ़स्माने ग़नी

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अभी आप ने जो ह़दीसे पाक सुनी उस के रावी (या'नी बयान करने वाले) जामेउ़ल क़ुरआन, तीसरे

ख़लीफ़ा, ह़ज़रते **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की भी क्या शान है! आप का एक लक़ब "ज़ुन्नूरैन" (दो नूर वाले) भी है क्यूं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी **दो शहज़ादियां** यके बा'द दीगरे ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के निकाह़ में दी थीं और फ़रमाया : अगर मेरी दस बेटियां भी होतीं तो मैं एक के बा'द दूसरी से तुम्हारा निकाह़ कर देता क्यूं कि **मैं तुम से राज़ी हूं**। (معجم کبیر، 22/436، حدیث:1061)

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने आग़ाज़े इस्लाम ही में क़बूले इस्लाम कर लिया था, आप की कुन्यत "अबू अ़म्र" और लक़ब जामेउ़ल क़ुरआन है, आप को "साह़िबुल हिज्रतैन" (या'नी दो हिजरतों वाले) कहा जाता है क्यूं कि आप ने पहले ह़बशा और फिर **मदीने शरीफ़** की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई। (करामाते उ़स्माने ग़नी, स. 4, 3)

उ़स्माने ग़नी का इत्तिबाए रसूल

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल बल्कि इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का अ़मली नुमूना थे अपनी बातों और त़ौर त़रीक़ों में **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और अदाएं ख़ूब ख़ूब अपनाया करते थे। चुनान्चे एक दिन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मस्जिद के दरवाज़े पर बैठ कर बकरी की दस्ती का गोश्त मंगवाया और खाया और बिग़ैर ताज़ा वुज़ू किये नमाज़ अदा की फिर फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इसी जगह बैठ कर येही खाया था और इसी त़रह़ किया था। (مسند امام احمد، 1/137، حدیث:441)

दो बार जन्नत ख़रीदी

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शाने वाला बहुत बुलन्दो बाला है, आप ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी में मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मरतबा **जन्नत** ख़रीदी, एक मरतबा "बीरे रूमा" यहूदी से ख़रीद कर मुसल्मानों के पानी पीने के लिये वक़्फ़ कर के और दूसरी बार "जैशे उ़सरत (या'नी ग़ज़्वए तबूक)" के मौक़अ़ पर। चुनान्चे ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर मुसल्मानों की बे सरो सामानी को देखते हुए पहली दफ़्आ़ एक सो (100) ऊंट, दूसरी मरतबा दो सो (200) ऊंट और तीसरी बार तीन सो (300) ऊंट देने का वा'दा किया। रावी फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हुज़ूरे अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर मिम्बरे मुनव्वर से नीचे तशरीफ़ ला कर दो मरतबा फ़रमाया : "आज से **उ़स्मान** (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) जो कुछ करे उस पर मुआख़ज़ा (या'नी पूछगछ) नहीं।"

(ترمذی، 5/391، حدیث:3720 ملخصًا)

शर्मो ह़या, तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी), इत्तिबाए़ सुन्नत, ख़ौफ़े ख़ुदा और फ़िक्रे आख़िरत आप की सीरते मुबारका के रोशन पहलू हैं। ख़ौफ़े ख़ुदा का येह आ़लम था कि यक़ीनी जन्नती होने के बा वुजूद जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आंसूओं से आप की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। (ترمذی، 4/138، حدیث:2315)

वफ़ात शरीफ़ : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने बारह साल मस्नदे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रह कर 18 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम सिन 35 हिजरी में बरोज़ जुमुआ़ रोज़े की ह़ालत में तक़रीबन 82 साल की त़वील उ़म्र पा कर निहायत मज़्लूमिय्यत के साथ जामे शहादत नोश फ़रमाया। शहादत के

बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने रह़मते आ़लम को ख़्वाब में फ़रमाते सुना : बेशक उ़स्मान को जन्नत में आ़लीशान **दूल्हा** बनाया गया है। (الریاض النضرۃ، 2/72)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मिली तक़्दीर से मुझ को सह़ाबा की सना ख़्वानी
मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 584)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

जुमुआ़ की फ़ज्र बा जमाअ़त की ख़ुसूसी फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ बयान करते हैं कि **रसूले अकरम**, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जुमुआ़ के दिन पढ़ी जाने वाली **फ़ज्र की नमाज़े बा जमाअ़त** से अफ़्ज़ल कोई नमाज़ नहीं है, मेरा गुमान (या'नी ख़याल) है तुम में से जो उस में शरीक होगा उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" (معجم کبیر، 1/156، حدیث:366)

नबी का गुमान यक़ीन के बराबर होता है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस ह़दीसे पाक में कहा गया है : "मेरा गुमान (या'नी ख़याल) है।" इस की शर्ह़ येह है कि नबी का गुमान (या'नी ख़याल) यक़ीन के बराबर होता है। (نزہۃ القاری، 1/675) लिहाज़ा मत़लब येह हुवा कि वाक़ेई जुमुआ़ की नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त पढ़ने वाले के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। अह़ादीसे मुबारका में जहां गुनाह मुआ़फ़ हो जाने

का तज़्किरा होता है वहां सग़ीरा या'नी छोटे गुनाहों की मुआ़फ़ी मिलना मुराद होता है क्यूं कि कबीरा या'नी बड़े गुनाह तौबा से मुआ़फ़ होते हैं।

फ़ज्र व इ़शा चालीस दिन बा जमाअ़त पढ़ने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत

जो ख़ुश नसीब मुसल्सल चालीस दिन तक फ़ज्र व इ़शा बा जमाअ़त अदा करता है वोह जहन्नम और मुनाफ़क़त से आज़ाद कर दिया जाता है जैसा कि ख़ादिमे नबी, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने चालीस दिन **फ़ज्र व इ़शा** बा जमाअ़त पढ़ी उस को **अल्लाह** पाक दो आज़ादियां अ़ता फ़रमाएगा। एक नार (या'नी आग) से, दूसरी निफ़ाक़ (या'नी मुनाफ़क़त) से।"

(تاریخ ابن عساکر، 52/338)

दोज़ख़ से आज़ादी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो चालीस रातें मस्जिद में बा जमाअ़त **नमाज़े** इ़शा पढ़े कि पहली रक्अ़त फ़ौत न हो, **अल्लाह** पाक उस के लिये दोज़ख़ से आज़ादी लिख देता है।"

(ابن ماجہ، 1/437، حدیث:798)

रसाइल की बरकत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा जमाअ़त की अदाएगी का ज़ेह्न मज़बूत़ बनाने, नमाज़ की ख़ात़िर मीठी मीठी नींद को ख़ात़िर में न लाने और हर ह़ाल में रिज़ाए इलाही पाने के लिये जिद्दो जह्द फ़रमाने की सोच

बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में रहना निहायत मुफ़ीद है। आइये ! दा'वते इस्लामी की एक "मदनी बहार" सुनते हैं : एक नौ जवान इस्लामी भाई बहुत फ़ैशन पसन्द थे जब भी मार्केट में नए फ़ैशन की पेन्ट शर्ट आती येह ख़रीद लिया करते। दुन्या की मस्ती में ऐसे गुम थे कि इन का नमाज़ पढ़ने को जी नहीं चाहता था, इन की वालिदा फ़ज्र की नमाज़ के लिये जगातीं तो "कल से पढ़ूंगा, इस जुमुआ से नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ करूंगा" वग़ैरा कह कर टाल दिया करते। इन के बड़े भाई जो कॉलेज में पढ़ते थे, वोह ख़ुश क़िस्मती से दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गए जिस के असरात घर तक भी पहुंचे। बड़े भाई एक दिन सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से वापस लौटे तो मक्तबतुल मदीना के चन्द रसाइल लेते आए, जब छोटे भाई ने येह रसाइल पढ़े तो इन का दिल चोट खा गया कि अब मुझे भी दा'वते इस्लामी वाला बनना है। चुनान्चे येह भी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुए जहां इन्हों ने बयान "काले बिच्छू" सुना। इन्हों ने रो रो कर तौबा की और दाढ़ी शरीफ़ चेहरे पर सजाना शुरूअ़ कर दी। येह ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद भी बने और दा'वते इस्लामी का मदनी काम करते करते दर्से निज़ामी में दाख़िला भी लिया और "वुकला मजलिस" के सूबाई ज़िम्मेदार भी बने।

ऐ बीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर गुनाहों की देगा दवा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

फ़ज्र व अ़स्र के फ़ज़ाइल

फ़िरिश्तों की तब्दीलियों के अवक़ात

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम में रात और दिन के फ़िरिश्ते बारी बारी आते हैं और **फ़ज्र** व **अ़स्र** की नमाज़ों में जम्अ़ हो जाते हैं, फिर वोह फ़िरिश्ते जिन्हों ने तुम में रात गुज़ारी है ऊपर की त़रफ़ चले जाते हैं, **अल्लाह** पाक बा ख़बर होने के बा वुजूद उन से पूछता है : तुम ने मेरे बन्दों को किस ह़ाल में छोड़ा ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : हम ने उन्हें **नमाज़** पढ़ते छोड़ा और जब हम उन के पास पहुंचे थे तब भी वोह **नमाज़** पढ़ रहे थे। (بخاری، 1/203، حدیث:555)

हर बालिग़ के साथ 62 फ़िरिश्ते

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ों में जम्अ़ हो जाते हैं) के तह़्त फ़रमाते हैं : यहां फ़िरिश्तों से मुराद या तो आ'माल लिखने वाले दो फ़िरिश्ते हैं या इन्सान की ह़िफ़ाज़त करने वाले साठ फ़िरिश्ते, हर ना बालिग़ के साथ साठ (60) फ़िरिश्ते रहते हैं और बालिग़ के साथ 62। इसी लिये **नमाज़** के सलाम और दीगर सलामों में इन की निय्यत की जाती है। इन मलाएका की ड्यूटियां बदलती रहती हैं, दिन में और रात में मगर **फ़ज्र** व **अ़स्र** में पिछले फ़िरिश्ते जाने नहीं पाते कि अगले ड्यूटी वाले आ जाते हैं ताकि हमारी इब्तिदा व इन्तिहा (या'नी शुरूअ़ करने और ख़त्म करने की कैफ़िय्यत) के गवाह ज़ियादा हों। इस ह़िस्से (ऊपर की त़रफ़ चले जाते हैं) के तह़्त

लिखते हैं : अपने "हेड क्वॉर्टर" की त़रफ़ जहां उन का मक़ाम है। मुफ़्ती साहिब ह़दीसे पाक के इस हिस्से (हम ने उन्हें नमाज़ पढ़ते छोड़ा और जब हम उन के पास पहुंचे थे तब भी वोह नमाज़ पढ़ रहे थे) के तह़्त तह़रीर करते हैं : इस का मत़लब या तो येह है कि फ़िरिश्ते नमाज़ियों की पर्दापोशी करते हैं कि आस पास की नेकियों का ज़िक्र और दरमियान के गुनाहों से ख़ामोशी या येह मत़लब है कि ऐ मौला ! जिन बन्दों की इब्तिदा व इन्तिहा (या'नी शुरूआ़त और ख़त्म होने की कैफ़िय्यत) ऐसी हो उस में हमेशा बरकत ही रहती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/394, 395)

फ़िरिश्तों वाली ह़दीस के उ़म्दा मदनी फूल

❀ **नमाज़** एक आ'ला इबादत है कि इस के बारे में सुवाल जवाब होता है ❀ नमाज़े **फ़ज्र** व **अ़स्र** दीगर नमाज़ों के मुक़ाबले में आ'ज़म (या'नी ज़ियादा अ़ज़मत वाली) हैं ❀ इस ह़दीसे पाक में इन दोनों अवक़ात के शरफ़ (या'नी अ़ज़मत व बुज़ुर्गी) की त़रफ़ इशारा है क्यूं कि **फ़ज्र की नमाज़** के बा'द रिज़्क़ तक़्सीम होता है जब कि दिन के आख़िरी हिस्से (या'नी **अ़स्र** के वक़्त) में आ'माल उठाए जाते हैं, तो जो शख़्स इन दोनों वक़्तों में मसरूफ़े इबादत होता है उस के "रिज़्क़ व अ़मल" में बरकत दी जाती है ❀ येह उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल है और इस उम्मत के अफ़्ज़ल होने से **अल्लाह** पाक के प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से अफ़्ज़ल होना लाज़िम आता है। (عمدۃ القاری، 4/65)

अगले हफ़्ते का रिसाला